भजन डायरी

श्री रामलाल जी साहेब

।कबीर पन्थी।

ग्राम व पोस्ट - टौंककला

तहसील - टौंकखुर्द

जिला - देवास ।म.प्र.।

भजन क्रमांक 1

टैक गुरू सामदाता कोई नहीं जग है मोगन हारा ।
क्या राजा क्या बादशाहसब ने हाथ पसारा ।। टैक

चरण 1. तीन लोग के ऊपरे सत शब्द उधारा ।
सात दीप नौखंड मैं तकासकल पसारा ।।

चरण 2. पाथर को पूजन फिरे तामे क्या पावे ।
तीरथ को फल देतो एकसंत जिमावे ।।

चरण 3. आपराधी तीरथ चले क्या तीर तारा ।
काम क्रोध कोरे रहाखाली अंग परवारा ।।

चरण 4. कागज केरी नौका है लोहा भर भारा ।।
हलका हलका उबरे डुबे पापी मजधारा ।।

चरण 5. वंस मनोरथ पिया मिले घर मैं भया उजियारा ।
सतगुरू पार उतारिया सब संत पुकारा ।।

चरण 6. कहे कबीर धर्मीदास ने बाहार का डोले ।
साहिब तैरा तुझ महीने घट भीतर बोले ।।

भजन क्रमांक 2

टैक बलि जाऊ सतगुरू ने मेरो दिया भ्रम सब खोय । प्रेम ~~xxx~~
प्रेम लगो जद जाणियों बिना प्रेम मिलणो ना होय ।। टैक

चरण 1. घाव लागे जद जाणियों बिना घाव दरद ना होय ।
चरण 2. बिखमी घाटी चढ़णों सूरा बिन चढ़णो न होय ।।
चरण 3. कहे कबीर धर्मीदास ने गुरू बिना मुकती ना होय ।।

भजन क्रमांक 3

टैक गुरू जरणीी मैं बालक तेरा काहे न बख्सो अवगुण मेरा ।
बालक मलिन जो अधीक सतावे हंस-हंस माता कण्ठ लगावे ।।

चरण 1. केश पकडा करने नख घाता।
तबहु न हेत उतारे माता ।।

चरण 2. कोटिन अवगुण बालक करई माता पिता चित एक न धरई ।
चरण 3. बालक बिस देय महतारी तो रक्षा कौन अब करे हमारी ।।
चरण 4 कहे कबीर जननी की बरता बालक दुखीत दुखीत भई माता ।।

भजन क्रमांक 4

टैक गुरू बिना कोई काम ना आवे है । कुल अभीमान मिटावे है ।
कुल अभीमान मिटावो हो साधुभाई संत लोग पहुँचावे है ।। टैक

चरण 1. नारी कहे मै संग चलुँगी ठगनी न ठग ठग खाया है ।
अन्त समय मुख मोड चली है । संग लेश नहीं रहणे पाया है ।।

चरण 2. कोडी कोडी माया जोडी जोड के महल बनाया है।
अन्त समय मै थारे बहार काडिया पल भर भी रहणे नहीं पाया है ।।

चरण 3. बहुत जतन कर सुत को पाला लाड अनेक लड़ाया है ।
तन की लकड़ी तोड चला है हाथ से लापा लगाया है ।।

चरण 4. झुठारे लोग कुटम परिवारा धोखो जीव बन्धा है ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो सतगुरू बन्द छुड़ाया है ।।

भजन क्रमांक 5

टैक सतगुरू निबाणी जाके मुक्ति भरत है पाणी ।। टैक

चरण 1. अष्ट सिद्धि ना करे मुजरू और विधाता रानी ।
चन्द्र सुरज दोहु भये चिरागी सुरत गिगन गहरानी ।।

चरण 2. अरथ धर्म अरू काममोक्ष फल बैल फिरे ज्योघाणी ।
तहाँ क एक अगोचर निगम नेती न जाणी ।।

चरण 3. चार बेद नौ व्याकरण कहिये अष्टादश है पुराणी ।
सत्य भक्ति बिन चार पदारथ काग भिष्ट सम जाणी ।।

चरण 4. अवरण वरण रूप नहीं बाको गरज गिगन गहराणी ।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अजर अमर निशानी ।।

भजन क्रमांक 6

टैक सतगुरू अविनाशी मुक्ति रहती है दासी ।। टैक
चरण 1. ब्रम्हा जाको पार न पावे निरंजन केर खवासी ।
सहस सहस मुख निशदिन गावे सो भी पार ना पासी ।।

चरण 2. शंकर जाको ध्यान धरत है कहिये जोग अभ्यासी ।
चार वेद को भेद न जाने खोज खोज खप जासी ।।

चरण 3. ओंकार मै भ्रमता डोले विष्णु फिरे उदासी ।
नाम पदारथ हाथ न आवे पड़े काल की फांसी ।।

चरण 4. अजर अमर एक प्रेम पुरुष है वो कहिये फुलवासी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अमरापुर को वासी ।।

भजन क्रमांक 7

टेक सतगुरू दाता बड़े दयालु एक पलक मैं करे न्याल ।।

चरण 1. आद अनाद उपवाद अनादी बिना खोजा बिन सभी विवादी ।
जंतर मंतर सब कोई बिन खोजे बिन पड़र्त चंडाल ।।

चरण 2. सन्यासी की रीत न जाणी जटा बढाय भ्यो निबाणी ।
खोसन खाल सिंह की आणी बैठो बाघम्बर ने ढाल ।।

चरण 3. मुनिजन होकर ध्यान लगावे आँख मीच सैना मैं समझाय ।
मुख नहीं बोले दुध चढावे बैठ रियो सिर श्री नीचो डाल ।।

चरण 4. क्या भयो जिन राज कमायो क्या भयो जिन मुल्क बसायो ।
क्या भयो जिन ताल खोदायो पाणी पेला नहीं बाँधी पाल ।।

चरण 5. सुरत सुहागन चुड़िया पहने गलियन मैं डाले मोतीयन की माल ।
अपना पियाजी की खबर ना जान साँचा पिया बिन बेहाल ।।

चरण 6 कहै कबीर सुनो भाई साधो काम क्रोध ने मारो ऐ हटाय ।
अल म्हारी सुरता लागी भजन से जद पावोगा पद निरबाण ।।

भजन क्रमांक 8

टैक केई विध पार उतारो गुरासा महने केई विधपार उतारो ।।

चरण 1. उंडा नीर याग नहीं वाको दीखे नाही किनारो ।
बाल बराबर पाल बान्दी है पवना को चल लहरो ।।

चरण 2. चार चामारी करत खवारी दिल नहीं देत सहरो ।
तृष्णा जी को बाण चलत है गुरू तो बचावन हरो है ।।

चरण 3. मोह मगरमच्छ पाइ रयो है भंवर पड़े अती भारो ।
दुविधा लोर लाग रही है काल को बजतनगारो ।।

चरण 4. गुरू का वचन हाथ ले चाबुक नाम की नोका डारो ।
कहे कबीर सुनो धर्मदासा एही विधी लगो किनारो हो ।।

भजन क्रमांक 9

टेक सतगुरू गही लई बींहा नहीं तो मै बही जाती ।
बही जाती चोरासी धार जनम यु ही जासी ॥

चरण 1. जग झुठा बदनाम है मन ज्ञानीअभीमान ।
सतगुरू बोली बोलीया जोस भनक पडी मेरे कान ॥

चरण 2. बारू नग पैदा किया धन कारीगर तोय ।
सिकलीगर सतगुरू मिले दरश दिखा वो मोय ॥

चरण 3. माया मार ममता तजे शब्द सैने ही होय ।
लोभ लालच सब तजे सतगुरू परसे होय ॥

चरण 4. काम क्रोध जो त्याग है तिन घर भरम समाय ।
कहे कबीर ते बांच ही नहीं तो जमपुरा जाय ॥

भजन क्रमांक 10

टेक मिलना कठीन है कैसे मिलु पिया जाय ॥
चरण 1. आगम भूमी जहाँ महल की हमसे चडीयो न जाय ।
औघट घाट गैल रपटीली पाँव नहीं ठहराय ॥

चरण 2. साथ साध पग धरू पंथ बार-बार डिग जाय ।
अती बारीकपंथ बहु झीना सुरती झकोरा खाय ॥

चरण 3. लोक लाज मरजाद जगत की देखत मन सुखपाय ।
जो यह बातनहीं जो बने तो लाज जती ना जाय ॥

चरण 4. दुजे सतगुरू मिले पंथ पर मारग दियो बताय ।
साहेब कबीर मुक्ति के दाता शितल अंग लगाय ॥

भजन क्रमांक 11

टेक गुरू पठायो चेला भिक्षा लेकर आओ रे ।।

चरण 1. पहली भिक्षा आटा लावो गाँव नगर बस्ती के पास न जाओ ।
नर नारी को छोड़ के झोली भर कर लाओ ।।

चरण 2. दुजी भिक्षा जल ले आवो कुवा बावड़ी के पास ना जाओ ।
नंदी समंदर छोड के तुम तुम्बी भर कर लाओ ।।

चरण 3. तीजी भिक्षा लकड़ी लाओ झाडी के xx जंगल के पास न जावो
सुखी आली छोड़ के तुम भारी लेकर आओ ।।

चरण 4. चोथी भिक्षा मांस ले आओ जीव जन्तु के पास न जाओ ।
मुर्दा जिन्दा को छोडके तुम मांस लेकर आओ ।।

चरण 5. कहे कबीर सुनो नर लोही ओ पद बुजे बिराला कोई सुगलत गुरू
सो पावो ।।

भजन क्रमांक 12

टेक मै सोउ सतगुरू थारे मांही सतगुरू है मुझ माही ।
निद्रा न आवे नड़ा काम क्रोध सकल भउ नाही ।।

चरण 1. धरण गिगन बिच कुबुयन सोहु देवू सुरसद वाली फेरी ।
नाभ द्वदश सूद समाऊ उलर बंक दिश होरी ।।

चरण 2. दस दरवाजा बन्द कर सोऊ घुलकत मुलकत नाहीं ।
पाँचो चोर पगा तले देऊ तीन गुण को गम नैही ।

चरण 3. मेरूदंड का मारग सीधा सोहंग बंग थरराई ।
वहचर ववन नभ डोरी लागी सहज इक्कीसो पाई ।।

चरण 4. सोता पीछे कबहु नाही जागु लुट जाओ लंका भलाई ।
इन्दर पुरी स्वरग लुट जाओ धरन गिगन डिग जाई ।।

चरण 5. ववन गहे जो साधु के ही जनम मरण मिट जाई । x
कहे कबीर किसो को कम नाही मेरो गम मुझ माई ।।

भजन क्रमांक 13

टेक आज मेरा भाग जागे साधु आये पावणा ।
साधु आये पावणा सन्त आये पावणाऋ ।।

चरण 1. केशर गार गलवाणा आगणी लिपावणा ।
मोतीयन का चोक पुरा के कलश भरवाणा ।।

चरण 2. बन्दगी करू परामण तन मन वारू प्राणा ।
सत गुरू का काना लोग शब्द सुध बावना ।।

चरण 3. अंग अंग मै फुली भई दिल की दुरमति गई ।
प्रेम का फुंवारा बरसे भवन सुहावना ।।

चरण 4. आत्मा भई प्रकाशा करोड भाण का हों उजियासा ।
कहे कबीर साहाब आनन्द धावणा ।।

+ भजन क्रमांक 14 +
साखी

+ टैक + भक्ती दान मोहे दी जीये गुरू देवन का देवा ।
जनम धार बिछडु नहीं करू सन्तो की सेवा ।।

भजन क्रमांक नं 14

टेक. ~~चरण 1.~~ अरे सर्व सुखारो सुख नाम है मो पर कृपा कीज्यो ।
भवसागर से तार के अपना कर ली ज्यो ।।

1 चरण 2. अति सुन्दर सुख साहिबो वाचनासुद नारी ।
उतरा तो मागु नहीं गुरू मने आन तुम्हारी

2 चरण 3. सोना मेहरसुमेर ज्यो गज हस्ती दाना ।
करोड गऊ कन्या दान मै नहीं न नाम समाना ।।

3 चरण 4. जन्तर मन्तर टोटका बेकुन्ठा मै वासा ।
इतरा तो मागो नहीं जब लग पिंजरा मै सांसा ।।

4 चरण 5. धर्मदास की बीनती अवगत सुण ली ज्यो ।
अन्तर का परदा खोल कर ~~म~~ गुरू मने अपनो दर्शद दी ज्यो ।।

भजन क्रमांक 15

टेक रावली भक्ति को दाता गुण काई जग जन एक समाना ।
के तो निज भक्ती नहीं के झूंठा बाना ।।

चरण 1. सतगुरू भेटिया से गुण काई सुधरा नहीं चेला ।
के तो निज सतगुरू नहीं के जो मन नहीं झेला ।।

चरण 2. पारस भेयुया रो गुण कांई पलट्या नहीं लेवा ।
के तो निजपारस नहीं के जो रहा गया बिछेया ।।

चरण 3. मान सरोवर को गुण काई जहाँ हंसा दुखियारा ।
के तो निज साय नहीं के जुग भेक दारा ।।

चरण 4. पुष्प वास को गुण कांई जहाँ है भंवर उदासा ।
के तो निज फलना नहीं के भंवरा वे विश्वासा ।।

चरण 5. इह दाता पती को गुण काई मन भर दान न दीना ।।
कहे कबीर दान पती नहीं है कुछ कर्मों का हिना ।।

भजन क्रमांक 16

टेक ऐसी भक्ती ना कीजिए जग में होवे हाँसी अन्तकाल जम मारसी देय देह गला फाँसी ।
जैसे मंजारी परमोध से झूंठा बरत किया । सिर से दीपक डार के मुँसा गही लिया ।।

चरण 1. जैसे लाख पीघल चली पावक के संगा ।
पल एक बाहर काड़ता ह हो जावे भदरंगा ।।

चरण 2. जैसे मेंढक दरियाव में जल में रहे भरपुरा ।
जल से बाहर निकलता उपर डारे धुरा ।

चरण 3. दीखत को बुग नुग उजलो मन मेलो रे भाई आँच मीच वो मुनी भयो मच्छा गट काई ।।

चरण 4. सेल सम्भालो सांच का पाँवों स लडियो ।
कहे कबीर गुरु दान से जीवत ही मरिये ।।

भजन क्रमांक 17

टैंक भक्तीरा बिड़द दुहेला हो बानेरा ।
मनकर ग्रहण चौसठ पर रचीया ।

चरण 1. सतगुरू भक्त अकेला ।
विकट पंथ बेराट कहिये बिरला संत निभेला ।

चरण 2. सुरा सस्तर घेट न धरणी आय मिले नर पेला ।
शीष काटीया पाछे धड़ बाँका झुके खेत छोड नहीं जैला 22

चरण 3. तन की आस तनक नहीं राखें टुक टुक तन देला ।
होय आगा पग पछा नहीं देला दफ्तर माही छपेला ।।

चरण 4. सत सागर की पाल कबीर दिया हेला सुन-सुन रे मन चेला ।
अब ऐड़ा एड़ा बिड़द निभावे सत सुरा सोई गुरू का चेला ।।

टैक भजन क्रमांक 18

टैंक भक्ति का मारग झीना कोई जाणे जानन हारा संत जन वो जरविना।

चरण 1. ना कोई चाह आचाय न तामे मन लवलीनारे ।
संतो कीसंगत में निश दिन रहताभीना रे ।।

चरण 2. शब्दों मे सुरती यो बसेजल बिच मीना रे ।
जल बिछडत तत काल होतयो कबंल मलीना रे ।।

चरण 3 घनकुल ओ अभीमान त्यागकरहुआ अधीना रे ।
परमारथ के हेत देता शिर बिलमना कोना रे ।।

चरण 4. धारण कियो संतोष सदा अमृत रस पीना रे ।
भक्ति की रहनी कबीर जी प्रगट कर दीना रे ।।

भजन क्रमांक 19

टैंक बागां मत जारे थारो काया मैं गुलजार ।।

चरण क. करणी क्यारी बाडी के रहे रहनी रखवार । xxxx xxx x
कपट का गलो परो उड़ायो देखो अजब बहार ।।

चरण 2. मन मालो पर मोदियो करे शील को बार ।
दया वृक्ष सुखे नही सीचों छम्या जल धार ।।

चरण 3. गुल क्यारी के बीच मैं फूल रही फूलवार ।
फूल गुलाबी अजब रंग गुल गुलाबी हार ।।

चरण 4. अष्ट कंवल के उभरे लीला अगम अपार ।
कहे कबीर चित चेत के आवागमन निवार ।।

भजन क्रमांक 20

टैंक रंग रंग काफल खिला है अजब बाग गुलजार क्यारी मैं ।

चरण 1. तखत चार चोरासी क्यारी जाकीसड़कां न्यारी न्यारी है पेडो से बडे है ।

चरण 2. कुवा एक बाग के माही घोरा तीन लाग्या है वाका माही। अरे कुआ से बाग पिये है ।। रंग रंग का फल खीले है म्हारी काया बाग xxx xxx x गुलजार रंग रंग का तो फुल

चरण 3. मालण एक बाग के माही भर धोवो फूला को लाई मुख आगे आई ने धरे हैं । रंग रंग का फूल खिले हैं ।

चरण 4. बेठी माण माला पोई दिल चाहे ले जावो कोई देवों के शीष चढ़े है ।

चरण 5. रामानंद गुरू माला दीनी कहे कबीर प्रेम करी लीनी है । घट माही तो माला फिरे रे रंग रंग का तो फुल खिले रे म्हारी काया बाग गुलजार रंग रंग का तो फुल खीले ।

भजन क्रमांक 20

टेक आन लड़े सोही सुरा जनम लिया सो मरते दम ~~xx~~ ~~x~~ दम का लेखा भरसी ।।

चरण 1. थारा जलसरिखा बैरी क्यों सुतो नींद घनेरी ।

चरण 2. एक नाम तना आधारा बाका सकल पसार ।।

चरण 3 तोप बन्दूक नहीं छूटे गुरूगम से काया गढ़ लूटे ।।

चरण 4 दोड शिखर गढ़ लेना जल्दी से डेरा देना ।।

चरण 5 बठे लागा कबीर साहाका डंका जीत लिया गढ़ बंका

भजन क्रमांक 22

टैक नाम सिमर मन गैला सत गुरु देवे हैला ।।

चरण 1. ओ संसार हाट को मैलो मात पिता सुत भेला ।
घर की नारी गोत कडूंबा सार्ई नहीं चलेला ।।

चरण 2. लख चौरासीभटकत भटकत मन का जनत दोहेला।
मनक जनम मुशकील से पायो पुन जाग्यो भीपेला ।।

चरण 3. रात दिवस धंधा मैं मै लाग्यो स्वारथ काज केला ।
मोह की फाँसी मैं आ फँसी पसीयो सधिया कुटुम्ब संग मेला ।।

चरण 4. कंकर चुन-चुन महल बनाया कितना दिन रहेगा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो जावे जीव अकेला ।

भजन क्रमांक 23

टैक सतगुरू बोले अमृत वाणी बरसे कामली भीजे पाणी ।
आगर घाट भरे पणियारी पाथर फूटा गार सारी ।।

चरण 1. तले गागर उपर पणियारी । लड़के की गोद मैं खेले महतारी ।।

चरण 2. चलेगा पंछी थाके बाटा सोवे डोरियों गोरवे खाटा ।।

चरण 3. सुगुरा सोवे बहुत ~~x~~ डुलरावे जागे सुगुर बाग लगावे ।
बुटा दुबे भैस बिलावे बैठी मिनिया माखन खावे ।।

चरण 4. नोका डुबे सिला तिरावे । चोली का पाणी बल्डि जावे ।
कहत कबीर सुनो नर लोई ओ पद बूझ बिरला कोई ।।

भजन क्रमांक 24

टैक   प्राणी मैं मीन पियासी मोहि सुणसुण आवे हाँसी ।

चरण 1. अत्मा ज्ञान बिना नर भटके कोई मथुरा कोई काशी ।
जैसे मिरगा नाभ कस्तुरी बन बन फिरत उदासी ।।

चरण 2. जल बिच कमल बिच कलिया तीप भ्रमर निवासी ।
सो मन बन त्रिलोक भया है सही जती सन्यासी ।।

चरण 3. ज्याका ध्यान धरे हरिहर मुनीजन शेष अध्यासी ।
सो तेरा घर मांय बिराजे प्रेम पुरूष अविनाशी ।।

चरण 4. है हाजीर कोई दुर बतावे दुर की बात निरासी ।
कहत कबरी सुनो भाई साधो गुरू बिन भरम ना जासी ।।

भजन क्रमांक 25

टैक   परम प्रभु अपने ही उर पाया ।
जनम जनम की मेरी कल्पना सतगुरू भेद बताया ।।

चरण 1. जैसे कँवरी करमरी भू जोतके मन अकुलायो ।
केई सखी ये आय बतायो मन को भरम मिटायो ।

चरण 2. मिरगा की नाभ बसे कस्तुरी बन बन ढुँढत लायो ।
उलटी सुगन्ध नाक की लीनी सिरवर होय सुख पायो ।।

चरण 3. ज्यो तिरिया सपने सुत खीया जाय कंठे गंवाया ।
जागी पड़ी पलंग पर पाया न गया ना आया ।।

चरण 4. वाँका भेद कहूँ मैं कैसे ज्युं गुंगे गुड़ खाया ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो मन ही मन मुस्काया ।।

भजन क्रमांक 26

टेंक चलो गुरू जी के हाट ज्ञान गुण लाइये ।
लीजो साहब को नाम प्रेम पद पाइये ।।

चरण 1. साहीब सब कुछ दीन देवन कछु न रियो ।
तु ही अभागनी नार अमृत तज विस पियो ।।

चरण 2. गई थी पिया जी के महल पिया संग न रची ।
तेरे हृदय कपट कपट रयोछाय कुमती लज्जा वती ।।

चरण 3. जो गुरू रूठा होय तुरन्त मानाइये ।
हो रहीये दीन अधीन चुकबकसाधे ।

चरण 4. सतगुरू दीन दयाल दया दिल हो रही ।
तेरो कोटि करम कट जाय पलक चीत फेर रही ।।

चरण 5. भलो सरयो संजोग प्रेम का चोलना ।
तन मन अरपो शीशं साहब हूँस बोलना ।।

चरण 6. कहें कबीर समझाय समझ हृदय धरो ।
जगन जुगन करो राज दुर मती परी हरो ।।

भजन क्रमांक 27

टेंक सतगुरू दीन दयाल काल भय मेढ़िया पायो दीपक ज्ञान अमर भर भेटीयो ।

चरण 1. जो कुछ देखो चाहे मिलो सतसंग मे ।
उनसे कर लो सनेह मिलो उन रंग में ।।

चरण 2. अवीगत अगम अभेव अखण्डित पूर है ।
झिलमिल झिलमिल होय सदा बहु नूर है ।।

चरण 3. ईंगला पींगला साध यही तो एक ख्याल है ।
चंद भान गम्र नाय तहाँ मेरो लाल है ।।

चरण 4. कहे कबीर समझाय समझ नर बांवरा ।
हँस चले सत लोग उतर भवसागरा ।।

भजन क्रमांक 28

टेक पीयर रही बुलाय घणा दिन बाप । परसत गुरू जी ब्र के संग चलो घर आपका ।।

चरण 1. मामा मिला है मूसार भुवा बेनड़ी । तज सखीयन को संग जाय सनमुख खड़ी ।।

चरण 2. मात पिता सुत बीर तज्यो परिवार को । उबा छोड़या लोग चली है पार को ।।

चरण 3. बहुरी मिलना हो ना पीयर का लोग सू । चली है अपने देश पुरबला जोग सूं ।।

चरण 4. लज्या ओगट घाट कवल दल छेदिया 2 भंवर गुफा के बार निरंजन भेटिया ।।

चरण 5. चढी कलश पर जाय आगम गम झांकिया । निराकार निलेप पियाना वहाँ दिया ।

चरण 6. अगम महल में जाय मिली है पीव सूं । ब्रम्ह कियो भरतार पहरियो जीव सो ।।

चरण 7. अधर दीप मध्य पुरुष एक सार है । ताची कहे कबीर सोई भरता है ।

भजन क्रमांक 29

टेक पडो गुगना सत नाम बैठ तन ताक में ।

चरण 1. लावत अन्तर फुलेल काया है चाम की अरध उरध मिल जाय दवाई सतनाम की ।।

चरण 2. कहा लाया संसा कहाँ ले जायेंगें । निश दिन रहे अचेत तमाचा खायेंगें ।

चरण 3. यह गुदड़ी गलतान सबे गल जायेंगें । राजा एक वजीर सबे चल जायगें ।।

चरण 4. चेत हूँ काहे न सबेरा जम सो रारी है । काल के हाथ गिलोल तड़ाका मारि है ।।

चरण 5. माला लीन्ही हाथ कतरनी कांक मे । आग बुझी मत जान गड़ी है राख में ।।

चरण 6. चहुदिशा लगीयो बजार झिल मील हो रही । झुमर होत अपार अधर डोरी लही ।।

चरण 7. चौवदिश दिवला जाय महल बीच सोवणा । पर नारी के संग जन्म क्यो खोवणा ।।

चरण 8. साधु संत गुरूदेव तहा चले जाईये । ओर देवन को सेव ना चित मैं लावइये ।।

चरण 9. ओर देवन की अक्षेक्ष सेव भला नही जीव को । कहे कबीर विचार मिले नही पीव को ।।

भजन क्रमांक 30

टेंक मन नेकी कर ले दो दीन का मेहमान ।

चरण 1. जोरू लडका कुटुम्ब कबीला दो दिन का तन-मन का मेला । अन्त काल को चला अकेला तज माया मडांन ।।

चरण 2. कहाँ से आया कहाँ जायेगा तन छुट मन कहाँ रहेगा । आखीर तुमको कौन कहेगा गुरू बिन आतम ज्ञान ।।

चरण 3. कौन तुम्हारा सचा साँई झुठा यहा संसार सदा ही । कहाँ मुकाम कहाँ जाय समाई क्या बस्ती क्या गाँव ।।

चरण 4. रहटमाल पनघट पर फिरता जावत रीता आवत भरता । जुगन जुगन से जाता भरता क्यों करणा अभीमान ।।

चरण 5. हिलमिल रहणा देके खाना नेकी बात सिखावत रहणा । साहिब कबीर का सत है कहना भजले निर्गुण नाम ।।

भजन क्रमांक 31

टेंक जामर जोले लागी दुनिया टामक टुमक लगी हो ।
गुरू भक्ति नहीं भावे भावे ज्याने जर शरम नहीं आवे है ।।

चरण 1. चाँदी को तो फुल घड़ावे दोवड रात जगावे हो ।
काल पेई जदे बेची नेखा जावे भारो दोष कठिने जावे हो ।।

चरण 2. आलस मारी ने उबासी खावे सिर पर घूण लगावे हो ।
नाक कान पोपे का काटो देवत के तो पाछा आवे हो ।।

चरण 3. मीठा मलिन्दा चुरमा धुप पानचड़ावे हो ।
नारेला फोड़ टोपली राखेक गोला आप दबावे हो ।।

भजन क्रम भजन क्रमांक 31

चरण 4. होपर करता हाथ उठावे भोला ने भरमावे हो ।
कहें कबीर सुनो भाई साधो अ बदला न जावे हो ।।

भजन क्रमांक 32

टेंक तेरी काया नगर का कौन धणी
मारग मई लुटे पाँच जणी ।।

चरण 1. आशा तृष्णा नदीया भारी बह गया सिद्ध बड़ा ब्रम्हचारी ।
जो उबरा सो शहर तुम्हारी जैसे चमके सेल अणी ।।

चरण 2. पाँच पच्चीस मिल रोके घाटा साधु चढ़ गये उल्टी बाटा ।
घेर लिया सब औघर घाटा पार उतारो आप धणी ।।

चरण 3 बनमें लुटे मुनीजन नागा डस गई ममता उलटा टाँगा ।
जाके कान गुरू नहीं लागा सिगल्ली पर आन बणी ।।

चरण 4 शंकर लुट गए नेजा धारी रैयत उनकी कौन बिचारी ।
भुल रही करम की मारी त्रिकुट झुक रही तीन जनी ।

चरण 5. इन्द्र शिकारी गौतम नारी कुब्जा ले गए कृष्ण मुरारी ।
राधा रुखमणी बिलखत हारी रामचन्द्र में आन बनी ।

चरण 6. साहेब कबीर गुरु दिनां हेला धर्मदास सुनिये निज चेला ।
लम्बा मारग पंथ दुहेला सिमरो सिरजन हार धनी ।।

भजन क्रमांक 33

टेंक म्हारा सतगुरु बणीया भेदिया अरे म्हारी नाड़ी रे पकड़ी हाथ
अरे उन नाड़ी में लेहर उपजे म्हारो हियो हिलोरा खाय गुरू
म्हने ग्यान दई ग्या म्हारा तन बिच दियो लखाय सुमरण चेतन
कर ग्या ।

चरण 1. म्हारा सतगुरू आड.णरूखणी है सिजोरे सब कोय ।
अरे आँगुनउपर गुण करे म्हारा सभी पाप झाड़ जाय गुरू म्हने
ज्ञान दई ग्या है ।।

चरण 2. अरे भावरो बोले घणा है फलीरयों चोफेर । अरे म्हारी आनन्द सभा में बाद जो । म्हारा घाड्डीया घडेला होय गुरू म्हने ग्यान दी ग्या है ।।

चरण 3. अरे म्हारा सतगुरू सैना सुरमों है अरे रती नी लोग काच । अरे म्हारा सत गुरू भाला रोपीया म्हरे लगे कलेजारा माय गुरू म्हने घायल कर ग्या है म्हारा तन बिच दिया लखारा सुमरण चेतन कर ग्या है ।

चरण 4. अरे मन मोयलो चोर लो है जी ईणी सुटता से कर लि जो ▪ * तार । अरे सेवा गुरू अमरत को पियालो दियो है खिमाने पिलाय* गुरू म्हाने न्याल कर ग्या है ।

भजन क्रमांक 34

टेंक अरे गुरू सरिका देव स हमारे मन भावे ।
गुरू काटे करम की जाल जीव सुख पावे गुरू काटे भरमम की जाल जीव सुख पावे ।।

चरण 1. अरे ऐसा अखंडीत नाथ चराचर धावे ।
भई सकल बम्ह के माय बँद यूँ गावे ।।

चरण 2. अरे ईंगला पिंगला नार सुखमणा को धावे सुखमणा को धावे ।
और आराऊरद की बिच मन ठेरावे ।।

चरण 3. अरे बोलिया ईशवर दास भरम ने भगावे भरम ने भगावे । अरे वो नर सन्त सुजान परम पद जावे ।
अरे गुरू सरीक का देव हमारे मन भावे हमारे मन भावे गुरू काँटे करम की जाल जीव सुख पावे ।

भजन क्रमांक 35

टेंक   अरे गुरू दीया अमर नाम गुरू सरका कोई नहीं ।
जीण घर भरीया खजीना भरपुर कमी जामे है नहीं अरे अलख भर्या
है भंडार कमी जामे है नहीं ।।

चरण 1. गुरू म्हारा नाम सरिको धन मती तो अजाण के ।
नुगरो देखे तारा हन्दी जोत कई जाणे नाम के ।।

चरण 2. अरे भलहल ऊगा सुरिया भाण चन्दा तारा छीपी गया ।
जाप तप जोग अनेक नाम तलाछ्पी गया ।।

चरण 3. अरे समन्दर लागी है लाय जलाया से न जले ।
जो कोई ढुगोगा वेद पुराण नाम गुरू बिना न मिले ।।

चरण 4. अरे गर्व है चतरदास भजो निज नाम को ।
यो हो तो अवसर चुके जाय फिर पछतावेगो ।।

चरण 5. अरे कहे कबीर समझाय समझ नर बावरा ।
अरे हँस चले सतलोक उतर भवसागरा ।।

चरण 6. ~~क~~ ऐसा गुरू ने दिया अमर नाम साहाब सरिका कोई नहीं ।
जीण घर अलख भरा है भण्डार कमी जामे है नहीं ।।

साखी   अरे गुरू बिचार क्या करे जो चेला ही माही चुक ।
भावे ही परमाधीये जैसे बास बजाई फुक ।।

भजन क्रमांक 36

टेंक   ~~म~~ अरे जनम लिया सबक्ष मरवाने आया। अरे मौत नगारा थारे कुटे ।
भजन बिना जम चोपटा लुटे ।।

चरण 1. अरे जम राजा का होल्या रे छुटा पर पट नाड़ी थारी टुटे ।
रूख गया कंठ दसी दरवाजा पल में प्राण थारो छुटे भजन बिना
जम चोपटा लुटे ।

चरण 2. ईनी काया में हाट भराणों गली गली थारी छुटे । ~~अरे हकेई~~
अरे दोई दुकान लगी मुख आगे अरे निजमाल थारो लुटे भजन बिना
यम चोपट लूटे ।।

चरण 3. भाई रे बन्द थारा कुटम्ब कबीलक्ष राम रूठे ने सब रूठे ।

चरण 4. अरे हाथ पकड आगे कर लेगा और कलड़ोकपडे तो थारो कुटे भजन बिना जय चोपटा लुटे ।।

चरण 4. ईनी काया में घणो दुख पायो घणी घणी थारे बिते ।
गारा की धमधोल उठे है अरे चील कागलx टुटे भजन बिना जम चोपटा लुटे ।

चरण 5. अरे जम राजा की भरी कचैरी दोई वकील थारा छुटे ।
अरे कहे कबीर सुनेरे भाई साधो गुरू बिन नही छुटे भजन बिन जम चोपटा लुटे ।। अरे जनम लिया सब गरवाने आय मौत नगारा थारे कुटे । भजन बिना जय xxx चोपटा लुटे ।।

भजन कृमांक 30x

टैंक तुम देखो लोगों भुले भुलया का तमाशा ।।

चरण 1. अरे नो दस मास गरब के अंदर करता नरक निवासा ।
बाहर आकर भुल गया तुम चाहे भांग बिलाशा ।।

चरण 2. खाटा मिठा भोजन चाहिये बस्तर चाहिये खासा ।
यम के दुत पकड़ ले जावे घाल गला में फासा ।।

चरण 3. कौड़ी कौड़ी माया रे जोडी 2 लाख पचासा ।
दिया लिया तेरे संग चलेगा और चले नहीं मासा ।।

चरण 4. वहन झुरे तेरी बार तिवारा माय झुरे दस मासा ।
तेरा दिन तक तिरिया रोवे फेर करे घर वासा ।।

चरण 5. ~~देहली~~ डेली तक तिरिया का नाता पलटा तक तेरी माता ।
मरघट तक सब मित्र सगाती हंस अकेला जाता ।।

चरण 6. हाड जले ज्यु लाकड़ी केस जले ज्यू घासा ।
अरे सोना जैसे काया जलाई है कोईनआवे.x x तेरे पासा ।।

चरण 7. लख चोरासी भटकत भटकत मिटी न मन की त्रासा ।
कहे कबीर सुनोभाई साधो यह दुनीया का रासा ।।

भजन कृमांक 38

टेंक सुरता मालण म्हारी निसवद बाडी म्हारी बाड़ी ने मेघवालीबोइयो

चरण 1. अरे कर लि जो ग्यान ध्यान निज काठा अरे करनी पे ठहरयो गुरा जी म्हारी बाड़ी म×ने मेघ वाली बांइयों हो ।।

चरण 2. अरे नाव कमल पर उरद रोपीया अनमुन बैल छ हलाइयो । अरे संवांसा मै स्वासां बन्दी घर नाला अरे सोहन शिखर घड छईयो । अरे करलि जो ग्यान ध्यान निज काठा और करनी पे ठेरईयो । गुरासा म्हारी बाड़ी ने मेघवाली बोईयो ।।

चरण 4. अरे सोहंग बिज आनन्द अकोरो प्रेम पान गेरईयो । अरे दुरलब पेड़ पछम के हन्दी डाल अरे दशमा पै ठेरइयो गोरजी म्हारी बाडी ने मैघवाली बोइयो ।।

चरण 4. ईनी काया में रतन निबजे हिरा हाट भरइयो । अरे दोई कर जोरी माली लिखमो जी बोले अरे कमी नी राखो अब कइयो हो गोरजी म्हारी बाड़ी ने मैघवाली बोइयो ।।

भजन कृमांक 39

टेंक जो थारी ईछा तिरबा की हो तो तुरंत तयारी कर लिजे रे । अरे तन मन धन अरपो गुरा अरे हिमत हर मत लिजे ।।

चरण 1. अरे यो मन थारो किया नहीं माने अरे दोस गुरा के मत दिजे । भगती राजी होई ने किजे ।।

चरण 2. अरे पैला दिल अपनो कर मोछो पिछे पावड़ा मत दिजे रे । भगतीरा जी होई ने किजे रे ।।

चरण 3. अरे ओहंग सोहंग की रचाना देखी ले माय मगन होई रिजे रे । अरे अजपा जाप जपो सुमरण का अरे उन मुनी आसध किजेरे भगती राजी होईयने किजे रे ।।

चरण 4. ईंगला पिंगल सुखमण जोड़ले घर सुखमण को किजेरे । अरे दादूराम सतगुरू सरनो मै अरे जीव मुगत कर किजे रे भगती राजी होय ने किजे रे ।। अरे यो मन थारो कियोरे नहीं माने है अरे दोस गुरा के मत दिजे रे भगती राजी होय ने किजे ।।

भजन क्रमांक40

टेंक अरे सुमरण कर ले सवाया रे साधु भाई सुमरण करले सवाया । अरे बिना सुमरण साहाब नहीं मिलता अरे येही कारण दुःख पाया रे साधु भाई सुमरण करले सवाया ।।

चरण 1. अरे काय कारण तु चलकर आया है काय कारण धारी काया । तु ध्यान धरे है अरे कहाँ तो जाय समाया रे साधु भाई सुमरण कर लो सवाया

चरण 2. अरे इछा कारण चलकर आया है अरे उतपती कारण काया अरे ध्यान धरू साहाब जी के कारण सुन मैं जाय समाया रे साधु भई सुमरण कर ले सवाया ।

चरण 3. अरे कोन सुन धारी उतपुती कइये कौन सुन हो आया अरे कौन सुन कर ध्यान धरौं है अरे कहाँ तो जाय समाया रे साधू भाई सुमरण कर ले सवया ।।

चरण 4. अरे जल सुन म्हारी उतपुती कईये सुन सिखर हो आया अरे अरवय सुन का ध्यान धरू है अरे निर्मल सुन मैं समाया हो साधो भाई सुरण कर ले सवाया ।।

चरण 5. कहे कबीर सुनो भाई साधो अरे उतर परसंग गया रे साधु भाई सुमरण कर ले सवाया ।। अरे बिना सुमरण साहाब नही मिलता अरे यही कारण दुख पाया ।

-----5--------------------------

भजन क्रमांक - 41

टैक अरे ओ घर ऐसारे कइये रे साधु भाई ओ घर ऐसारे कई । अरे जोई समज घर रहइये रे साधु भाई ओ घर ऐसारे कइये ।।

चरण 1. अरे घर से अधर अधर से आगे अरे हद बेहद से ऊँचा/अरे बिन जील का छहरस भोजन अरे अमरत लिया है गीनानी रे साधु भाई ओर घर ऐसारे

चरण 2. अरे बिना नैण से सब जुग देखा अरे बिन सरवण सुण वाणी । अरे बिना जील का छटरस भोजन अरे अमरत लिया है गीनानी रे साधु भाई ओ घर ऐसारे कईये ।।

चरण 3. अरे बिन नासी का सांस सुवांसा बिन इन्दरी रस भोगा । अरे ना कोई पाच पचीस मे प्रगट अरे ना कोई जोग वियोगा रे साधुभाई ओ घर ऐसारे कईये ।।

चरण 4. अरे नाम बिना एक नाम निरमला अरे सतगुरु मोहे लखईये । अरे कहे कबीर या नाम की महिमा अरे ग्यानी होय सो पढ़िये रे साधू भाई औ घर ऐसइरे कईये ।।

भजन क्रमांक - 42

टैक क्या जो वे घर दूर दिवाने । ऐसी फकीरी म्हारे दाय नी आवे माया के मजूरा ।

चरण 1. एनूलहक हक कर बोले सुरी दिया मनसुर शेख फरीद कुवा में लटके हो गया चकना चुर ।। दिवाने क्या जो वे घर दुरा ।।

चरण 2. शाह सुल्तान मुलक ताज निकसे छोड़ी सोला सो हुरा । गोरख गोपीचन्द्र भरतरी सीर में डारी धुर दिवाने क्या जोवे घरह दुरा ।।

चरण 3. नानक व नाथा औx वजीन्दा झिलमिल दर से नूर । खोजत खोजत उमा सिराने ना पहूचै रहे दुर ।।

मरण 4. या कल जुग के नर पाखण्डी कबहुँ न रहत हजुरा । इनके मनरो कुफर बसते है माया के मगरूर ।।

चरण 5. गोरख काया खोजत भुला ना पाया भरपुर । कहे कबीर दया सतगुरु की झिलमिल दर से नूर ।। दिवाने गावे घर दुर ।

भजन क्रमांक - 43

टैक आखे का माने सदैवा । गुप्त भेद ज्या प्रगट सुणाया सबको होत उजैवा

चरण 1. बिन पग निरंत करां बिन बाना बिन जिबिया से गवेवा । बिन नेणा से सब जग देखा सो सुख काहे को कवेवा ।।

चरण 2. ब्रम्हा विष्नु और महादेवा तीन लोक भरमेवा । आवत जावत बहूत दिन बीता जम का ग्राह गरेवा ।।

चरण 3. ज्योती स्वीरुपी निरंजन देवा वो भी ध्यान धरेवा ।चोवदा लोक ताही करतम करता वो भी नाय पुगेवा ।।

चरण 4. बिन धरणी का देश हमारा रविचन्द्र नहीं उगेवा । मार्णक भेवर छतीसी सो भर हेता गिवण करेवा ।।

चरण 5. बिन पर वाण नहीं पुगे कराई उपायx करेवा । कहे कबीर वचन गाही डोरी अमर लोग पुगेवा ।।

भजन क्रमांक - 44

टैंक अवधु कहो अपणा निजि वासा । कहाँ से आया कहाँ तुम जावो कठे लगाई थारी आसा ।।

चरण 1. कैसा रंग बेरंग समझावो वो कैसा है साँई । कोण तखत पर आय बिराजे को खबरी कहा से लाई ।।

चरण 2. कोण देश है कोण देशांतर केई बिध बोली बाणी । कोण महल की टेल करत हो को सांची सेलाणी ।।

चरण 3. जीव सरपी किसका कहिये कहो कैसा अनुमाना । पाँच तत्व गुण तीन इहे छोड़ दो पीछे करो बखाना ।।

चरण 4. जीव का खोज बताओ जती गोरख तन तज कहाँ समाया । कहे कबीर सुनो जती गोरख कैसे पिण्डर पाया ।।

भजन क्रमांक - 45

टेक खोजा घर है न्यारा खोज बतावे वाने गुरू कर मानु नही तो छाप हमारा ।।

चरण 1. धरती को भार धवल पर कहिये बास करे सिर भारा । कच्छ मच्छ को किसके उपर कौरम किन का सारा ।।

चरण 2. कौन शब्द से रची धरतीरी कौन शब्द असमाना । कौन शब्द से चन्दा सुरा किनसे पानी पवना ।।

चरण 3. सात तबक तो नीचा कहिये सात तबक है उँचा । चवदा लोक कोखे ।। ल बतावे सोई जा णु गुरू पूरा ।।

चरण 4. बठे गयोड़ा फिर नहीं आवे ऐसा अवसर कर रे । कहे कबीर सुना भाई साधु उसी देश घर का रे ।।

भजन क्रमांक - 46

टैंक अरे नाम से मिलना कोई साधु भाई नाम से मिला ना कोई ।।

चरण 1. ज्ञानी मर गया ज्ञान भरोसे सकल भरमन जोई । दानी मर गया दान भरोसे क्रोड़ा लक्ष्मी न खाई ।।

चरण 2. ध्यानी मर गया ध्यान भरोसे उल्टी पवन पड़ाई । तपसी मर गया तप भरोसे ना कोई देह सताई ।।

चरण 3. काठ पाताण और सोना चान्दी की सुन्दर मुरत बनाई । नमजीदा मैं और ना मंदिर मैं तीरथ बरत मैं नाई ।।

चरण 4. कीजत बुझत सतगुरु मि गये सकल भरमणा ढोई । कहैं कबीर सुने भाई साधु या नाम की महिमा आप मिट्या गम ~~ग~~ होई ।।

भजन क्रमांक - 47

टैक हैंसा हंस मिल्या हंस होई । जैसे जोड़े बैठे बुगला का हंस कहे न कोई ।।

चरण 1. ए हैंसा है क्षीर कुप का नीर कुप वहाँ नाही । नीर कुप ममता को ब्रह्म पाखी ऐसजी था हंस होई ।।

चरण 2. दश अवतार आठ दानि कहिये वेद भणे नट सोई । वर्ण छतीसा ब्रह्म शास्तर गीता ए सजिया हंस होई ।।

चरण 3. पीच नाम अधातागर बहिये याते मुक्ति न होई । जो कुल छोड़े मिलो सतगुरु से सहजा मुकती होई ।।

चरण 4. तीन लोक पर बैठा जम राजा बैठो थाण सजोई । समज बिचार चढ्यो हंस राजा काल दिया तब रोई ।।

चरण 5. ए हंसा है अमर लोक का आवागमन मै नही । कहे कबीर सुनो भाई साधी सतगुरु सैन लखाई ।

भजन क्रमांक - 48

टैक आतो घर और है भाई साधो गुरु बिना पावेगे नाई ।

चरण 1. नहीं ज्ञान नहीं ध्यान कोई रैणी करणी । नही भेक नहीं साधक । बिन सैल गुरु की सैन बिनस नहीं छुटे है पामक ।।

चरण 2. नहीं बीज न क्षीज नही वह सोहंग साँसा । कोण कोण ह नर गया को ने कीना वासा । हद बेहद दोने नही नाम ठाम भी नाय । अब सुमर फिर का कर जी कुछ भी दीखत नाय ।।

चरण 3. नहीं पिरथी नहीं पातल नहीं वहाँ साहब सुन्दर । नहीं दीवस नहीं रैन नहीं वहाँ सुरज चन्दर । मुर जीवा का देश है मुरजीवा ह ही जा अभीमान छुटा बिना रे सुरन्त काल खा जाय ।।

चरण 4. धरो किसी का ध्यान कहो जी कोण बताया । खंड पंड भी नहही रंग वहाँ कहाँ से आया । सुन शिखर दोने नहीं न अजपा का जाप । तुमुरख भटकत फिरे तुझ मै आपो ही आप ।।

चरर्ण 5. नहीं आवे नही जाय नहीं कोई मरे ने जनमैं । संतगुरू जाने भेद दयामय कोयक सजह मैं । काल अमल व्योप नहीं ऐसा अपरम्पार । कहे कबीर सुनेरे सन्तो अखंड है भरता ।।

भजन क्रमांक - 49

टैक ओ तो घर हे नामो बेगामों ।

चरण 1. ज्ञान ध्यान जप तप नहीं साधन वेद कुरान नहीं वाणी । छे राग छतीस रागणी अलब काल छघाणी ।।

चरण 2. आवे न जाय मेर नहीं जनमें नहीं पेड मुख बाणी । को मैं किसका नूर बखापू दुनीया तो भरम भुलीणी ।।

चरण 3. है नहीं रंग रंग नहीं बाकै ऐसी अदल छपाणी । दिसट मुसट आवे नहीं सजना आया तो फिरे दिवानी ।।

चरण 4. है वो अधा धाग नहीं बांका कोई बिरला जन जाणी । कहत कबीर सुनो भाई साधो आ है मुगत निसाणी ।

भजन क्रमांक - 50

टैक ओ घर ऐवा कहिये । ज्यो को समज पकड थिर रहिये ।।

चरण 1. घर से अधर अधर से आगे हद बेहद से उँचा । नाद बिन्द वहाँ कछु हन पूगे वो ही फिरे मन पूछा ।।

चरण 2. बिना पेण मै सब जुग देखा बिन सरवण सुनी बानी बिन जीबीया का छट रस भोजन असरस लिया गिनानी ।।

चरण 3. बिन नासीका साँस सुवासा बिन इन्दरी रस भोगी । ना कोई पाँच पचीस मैं प्रगटा ना कोई जोग विजोगा ।।

चरण 4. नाम बिना एक नाम निरमला सतगुरू मोहे लिखाया ।
कहे कबीर नाम की महिमा ज्ञानी वे तो पाया ।।

भजन क्रमांक 51

टैंक गगन पर देश हमारा चले तो साहेब मिल जावे ।।

चरण 1. पाँचों तत्व तीन गुण नीचा तापर अलख लखाया ।।
तीन लोक पर अमर अखाड़ा काल भी डर जावे है ।।

चरण 2. भणिया गुणिया दोने थगीया समझौड़ा उलझाय है ।
सुरग नरग की गैल मै फिर फिर गोता खाय है ।।

चरण 3. निराकार अंकार नहीं है सिरगुण नाय है रे भाई ।
अरे चवदा लोक अगर के आगे हँस रहा लिपटाई है ।।

चरण 4. रामानन्द को सतगुरू मिलगया दीना भेद बताय है ।
अरे कहे कबीर सुनो भाई साधो आवागमन मिट जावे है ।।

भजन क्रमांक 52

टैंक अवधु मन बिन करम न होता ।
धँर नहीं गगन सुननहीं होता हम तुम दोनेकुण था ।।

चरण 1. अरे आप अलख अनन्दर होई बैठा बुन्द अमीरस छुटा ।
एक बुन्द का सकल पसारा परछ परछ होई झुटा ।।

चरण 2. मात पिता मिल मेरे व रे आया करीकरम की पूजा ।
पहले पिता अकेला होता पुत्र जलमिया दुजा ।।

चरण 3. सात कोड़ी सायर आठ कोड़ी परबत नोकुली नाग नहीं होता ।
उठारा करोड़ बनारस पक्षती नहीं था कमल काहे की करता ।।

चरण 4. ब्रम्हा नहीं था बिस्णु नहीं था नहीं था शंकर देवा ।
कहे कबीर वहाँ मंडप नहीं था मांडण वाला कुण था ।।

भजन क्रमांक 53

टैक   कोई सुणता है गुरु ज्ञानी गिगन में आवाज होवे झीणी ॥

चरण 1. ओहंग सोहंग बाजा बाजे त्रिकुटीसबद निशाणी ।
इंगला पींगला सुखं मण सोवे स्वेत धजा पहराणी ॥

चरण 2. वहाँ से आया पटा लिखाया त्रिसना नाथ बुझायी ।
अमरत छोड़ विखंय रस पीवे उलटी फांस फसाणी ॥

चरण 3. यहाँ से आया आद बिन्द से यहाँ जमावत पाणी ।
सब घट पूरण बोल रहा है अलख पुरूष निबाणी ॥

चरण 4. देखा दिन जितना जग देखा सहजे अमर निसाणी ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो अगम निगम की बाणी ॥

भजन क्रमांक 54

टैक   सुनियो जी मन गुरू अपना ही से ज्ञान तासे पद पायो निरबाण ॥

चरण 1. दिसट मुसट आवे नहीं सजनी ना कोई पिण्ड पराण ।
कहा लग बाका बरण बखानू लिव लागे नहीं ध्यान ॥

चरण 2. पानी से पतला धुवाँ से झीना ना कोई जीव ज्यान ।
देखत देखत नेणा थाकिया सुणत सुणत दोई कान ॥

चरण 3. खस खस हंदा मेर सुमेर राई मैं खलक समान ।
चवदा लोक का राजा निरंजन वो भी चरण समान ॥

चरण 4. हिन्दू तो वेदवा बांचे मुसलमान कुरान ।
दोनू दीन भरम मैं भुला नहीं पाया पिसरान ॥

चरण 5. उन पुरुषन के काल न व्यापे पावे पद निरबाण ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो मिट जावे आवाजान ।

भजन क्रमांक 55

टैक मोको कहाँ ढुंढे बन्दे मै तो तेरे पासमै ।।

चरण 1. ना तीरथ मे ना मुरत मै ना एकांत निवास मै ।
नामन्दीर मैं ना मस्जिद मैं ना काशी कैलाश मैं ।।

चरण 2. ना मै जप मे ना मै तप मैं नामे बरत उपास मैं ।
ना मै क्रिया कर्म म मै रहता न ही योग सन्यास मै ।।

चरण 3. नहीं प्राण मैं नहीं पिण्ड मै ना ब्रम्हाण्ड मैं * आकाश मै ।
ना भ्रुकुटी नाभंवर गुफा मैं ना स्वासनकी स्वास मै ।।

चरण 4. खोजी होय तुरत मिला जाऊ इक पल की ही तलाश मैं ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो मै तो हूँ विश्वास मैं ।।

चरण क्रमांक 56

टैक लाख कहीं समझाय सीख मोरी एक ना माने रे ।
यह मन ऐसा बावरा ।।

चरण 1. करे अनोखे काम थिर होय कबहुँ न लेत नहीं ईकपल प्रभू को नाम ।
हानी अरू लाभ ना जाने रे सीख मोरी एक ना मारे रे ।।

चरण 2. कहाँ लग वरणन करू अवगुन भरे अनेक ।
कहाँ लग वरणन करू अवगुन भरे अनेक ।
हित अनहित जाने नहीं अपनी राखत टेक । अमीर विष एक मै
साने रे सीख मोरी एक ना माने रे ।।

चरण 3. जहाँ-तहाँ मारा फिरे भली बुरी सब ढोर ।
जाने को चूके नहीं । जहाँ लग याकी दोर । रहे नहीं एक
ठिकाने रे सीख मोरी एक ना मारे रे ।।

चरण 4. यह मन है बहुरूपीया कहे कबीर विचार ।
ज्ञानी मुरख बावरा धारे स्वाग हजार । रार सन्तन से ठानी रे
सीख मोरी एक ना माने रे ।।

भजन क्रमांक 57

टैक गुरू भव डूबत पार उतारो गही हाथ नाथ मोहे तारो ।
है करूणा निधान हितकारी मै आये शरण तुम्हारी ।।

चरण 1. यद्यपी मै अती अधकर्मी नहीं मो सम कोऊ अधर्मी ।
यद्यपी तुम्हारी प्रभुताई कुछ न्युन देत दिखाई । गावत गुण है
श्रुती सारी मै आयो शरण तुम्हारी ।।

चरण 2. सब लोग कुटुम्ब है मैरे निज स्वारथ को बहुतेरे ।
जम राज पकड़ ले जावे तब कामहक्ष कोई नही आवे । यह बात
हृदय मै बिचारी ■ मै आयो शरण तुम्हारी ।।

चरण 3. करी कृपा कुबुद्धि विनासो सत ज्ञान हृदय मै प्रकाशो ।
भ्रम संशय लोक घनेरो सब दूर करो प्रभु मेरो । नि दास जानी ■
अधिकारी मै आयो शरण तुम्हारी ।।

चरण 4. कहे धर्मदास कर जो री इतनी बिनती प्रभू मोरी * जनजानी
अनुग्रह किजे गुरू भक्तिदान मोहे दीजे ।
तन मन चरणन मैं वारू मै आयो शहर तुम्हारी प्रभु दीन जान
दया किजे शरण आया की लाज रख दीजे ।।

भजन क्रमांक 58

टैंक संतो मूल भेद है कछु न्यारा कोई विरला जानन हारा ।

चरण 1. मुन्ड मुंडाय भयो कह धारे जटा जुट शिरभारा । कह भयो पशू
सम नग्न फिरे बन अंग लगाये छारा । कह भयो कन्द मूल फल
खाये वायु किया अहारा शीत उष्ण जल क्षुधा तृष्णा सही ■ जीरन
का डारा । साँप छोड़ी बामी को काटे अचरज खेल पसारा ।।
छोबी ते बस चले ■ नहीं कछु गदहा कहा बिगार ।।

चरण 2. योग यज्ञ जप तप संयम व्रत किया कर्म विस्तारा । तीरथ मुरति
सेवा पूजा ये उरले व्यवहारा । हरिहर ब्रम्हा खोजन हारे धरी
धरी जग अवतारा ।।

चरण 3. पोथी पानों मैं क्या ढूंढे वेद नीती कहीं हारा ।
बिन गुरू भक्ति भेद नहीं पावे भरमी सब संसारा । कहे कबीर
सुनो भाई साधो मानो कहा हमारा ।।

भजन क्रमांक 59

टैक संतो जीवत ही करू आसा सुने मुक्ती गुरू कहे स्वारथी झुठा दे विश्वासा

चरण 1. जीवत समझे बूझे जीवत होय भ्रम नासा जीवत मुक्त जो भरै मिले ताही गये मुक्ति निवासा ।।

चरण 2. मन ही ते बधन मन ही ते मुक्ती मन ही कासकल बिलासा ।
जो मन भयो जीवतस बस मैं नहीं तो देवे बहु त्रासा ।।

चरण 3. जो अब है सो तबहु मिली है ज्यो स्वजने जाग भासा ।
जहाँ आसा तहाँ वासा होवे मनका यही तमासा ।।

चरण 4. जीवत होय दया सतगुरू की घर मैं ज्ञान प्रकाशा ।
कहे कबीर मुक्त तुम होवो जीवत ही धर्मदासा ।।

भजन क्रमांक 60

टैक संतो सो निज देश हमारा । जहाँ जाय फिर हंस न आवे भवसागर की धारा ।।

चरण 1. सुर्य चन्दर नहीं तहां प्रकाशित नहीं नभमण्डल तारा ।
उदाय अस्त दिवस नहीं रजनी बिना ज्योति उजियारा ।

चरण 2. पाँच तत्व गुण तीन तहां नहीं नहीं तहां सृष्टि पसारा ।
तहाँ न पाया कृत प्रपच यह लोक कुटम परिवारा ।।

चरण 3. क्षुध तृषा नहीं शीत उषण तहाँ सुख दुख को संचारा ।
अधिन व्याधि उपाधी कछु तहां पाप पुण्य विस्तारा ।।

चरण 4. ऊंच नीच कुल की मर्यादा आश्रम वर्ण विचारा ।
धर्म अधर्म कछु यहाँ नहीं सयम नियम अचारा ।।

चरण 5. अति अभिराम सबों पर है रे सोभा जासु अपारा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो तीन लोक से न्यारा ।।

भजन क्रमांक 61

टैक संतो निरंजन जाल पसारा स्वर्ग पाताल मर्त्य मंडल रचि तीन लोक विस्तारा ।

चरण 1. हरिहर ब्रम्हा को प्रकटायो तिन्है दियो शिर भारा ।
ठाम ठाम तीरथ रची रोण्यो ठगवे को संसारा ।।

चरण 2. चौरासी बीच जीव फसावे कबहुँ न होय उबारा ।
जारी जारी भस्मी करी डारे फिर फिर देवे अवतारउ ।।

चरण 3. अवागमन रखे डरझाई बोवे भव की धारा ।
सतगुरु शब्द बिना नर चीन्हे कैसे उतरे पारा ।।

चरण 4. माया फांस फासय जीव सब आन बने करतारा ।
सतपुरूष को अमर लोक है । ताको मूधो दुबारा ।।

चरण 5. नेम धर्म अचार यग तप ये उरले व्यवहारा ।
जैसे मिले अखण्ड मोक्ष सुख सो मारग है न्यारा ।।

चरण 6. काल जाल से बचना चाहो गहो शब्द ततसारा ।
कहे कबीर के अमर करि राखौ जो होय xxxxx निज हमारा ।।

---

xxxx xxxx xxxxx xx
भजन क्रमांक 62

टैक निजन धन तुम्हारो दरबार तनिक न न्याय विचार ।।

चरण 1. रंग महल में बसे मसखरे पास तेरे सरदार ।
धूप धूप में साधू विराजे भये भव निधी पार ।।

चरण 2. वेश्या ओढ़े खासा मलमल गल मोतीयन को हार ।
पतिवरता को मिले न खासी सुखा निर आहार ।।

चरण 3. पाखंडी का जग मै आदर सबको कहे खवार ।
अज्ञानी को कहे परम विवेकी ज्ञानी को मूंड गवार ।।

चरण 4. कहे कबीर फकीरी पुकारी उल्टा सब व्यवहार ।
सांच कहे जग मारन धावे झूठे को इतबार ।। निरंजन धन तुम्हारो x दरबार जहाँ तनीक भी नहीं न्याय विचार ।।

भजन क्रमांक 63

xxxx x. xxxxx

टेंक नारद मेरो साधू से अंतर नाही । मेरे घर मै साधु बसत है मै साधुन के माही ।

चरण 1. साधु जिमाये मे मै जीमू होय अति तृप्त उधाऊ ।
साधु दुखाये ते दुख पाऊँ व्याकुल होय घबराऊँ

चरण 2. जागे साधु तो मै जागु सोवे साधु तो सोऊं ।
जो कोई साधु से द्रोह करे तो मै जरा मुल से खोऊँ ।।

चरण 3. जहाँ साधु मेरो यस गावे ताही मै करू निवासा ।
साधु चले आगे मै भी उठ धाऊ मोहि साधुन की आसा ।
आया मेरी है उधांगी सो साधु की दासी ।।

चरण 4. अड़सर तीरथ साधु शरण मै कोटी गया अरू कासी ।
साधु को ध्यान मेरे उर अन्दर रहत निरंतर भाई । कहे कबीर साधु की महिमा अस हरि निज मुख गाई ।

भजन क्रमांक 64

टेंक संतो सतगुरू अलख लखाया । जासो आप अपन दर्शाया ।

चरण 1. बीज मध्य ज्यो वृक्ष देखीये वृक्ष मध्य ज्यो छाया ।
पात पात मै आतम जैसे आतम मध्ये माया ।।

चरण 2. जो नभ मध्ये सुन सुन मध्ये ओंकारा ।
अक्षर मै निरक्ष दरसेक्षर अक्षर विस्तारा ।।

चरण 3. ज्यो रवी मध्ये किरण किरण मध्ये परकाशा ।
पार ब्रम्ह ते जीव ब्रम्ह है इमि जीव मध्य मैं स्वासा ।।

चरण 4. स्वास मध्ये शब्द देखिये अर्थ शब्द के माही ।
ब्रम्ह ते जीव जीव ते मन है न्यारा मिला सदा ही आपे बीच वृक्षक अंकुरा आप फुल फल छाया ।

चरण 5. सुरज किरण प्रकाश आप ही आप ब्रम्ह जीव माया ।
आतम मै परमातम दरसे परमातम मै साँई ।
साँई मै परछाई बोले लखे कबीरा साँई ।।

भजन क्रमांक 65

टैंक संतो दृष्टि परे सो माया । वह तो अचल अलेख एक है ज्ञान दृष्टि मैं आया ।।

चरण 1. सतगुरू दिये बताय आप मैं है माही सत कोई ।
दुजा किरतम थाप लिया है मुक्त कोन विधी होई ।।

चरण 2. काया झांई तिगुण तत्व की बिनसे कद वां जाई ।
जलतरंग जलहि सो उपजे फिर जल माहीं समाही ।।

चरण 3. ऐसी देही सदागत सब को मन मैं हरदम कोई उचारे ।
आपे श्यो नाम घर न्यारा ईस विध माया देखी बिचारे ।।

चरण 4. आपे रहो समाय समुझ मैं वा कहुँ जाय ना आवे । ऐसी स्वासा समुझ परे जब पूजे कह पुजावे ।।

चरण 5. छूरे न ध्यान करे ना जप तप नाम रही न गावे ।
तीरथ बरत सकलो भ्रम छोडी सुन दोर ना जावे ।।

चरण 6. जोग जुक्ति सो कर्म ना छुटे आप अपन ना सूके ।
ब्र क्र कहे कबीर सोई सन्त जोहरी जो यह समझे बूझे ।।

भजन क्रमांक 66

टैंक संतो ज्ञान कौन से कहिये । कौन ध्यान बिज्ञान कौन है कैसे जिन पर लहिये । को है जीव ।।

[illegible]
चरण 1. ब्रंहा कहु को है को अक्षर से न्यारा । कौ है नाम अनामी को है को कहिये औतारा ।

चरण 2. चार अवस्था पांचो मुद्रा जोग करेसो कवना ।
मुक्त नाम काहे सो ब्र कहिये कोन सार निज पवना ।।

चरण 3. बाहर भीतर व्यापक को है सकल ठौर मैं वासा । उतपति परले कौन करत है । को करे सबे तमासा ।।

चरण 4. येता जुगत लटवैं सो को है अलख नाम है काको ।
कहे कबीर सुनो भई सन्तो खोज करो तुम ताको ।।

भजन क्रमांक 67

टैक सन्तो सुनो शब्द का जाला करि हो ध्यान जान जब पैहो हासिल सबे हिसाब ।

चरण 1. ज्ञान सोई जो आतम चीन्हे और ज्ञान कछु नाही । चार दिशा के छोड आसरा मगन रहे मन माँही ।।

चरण 2. ध्यान सोई जो उनमुखी दरसे बालक सर्वविज्ञाना । या रहनी मैं चूके नहीं चाहे न माने गुमान ।।

चरण 3. जीव सोई जो जुग जुग जीवे उतपती परले माही । देह धरी ※ भरमे चोरासी निरभय कबहूँ नाही ।।

चरण 4. ब्रंम्हा सोई जो सब घर व्यापक निरअक्षर हैनाँही । औंकार आदि सबही के त्रिगुण तत्वता माहीं ।।

चरण 5. नाम सोई जाके है रूपा निरक्षर निज नामा । रामकृष्ण औतार आदी लो धरे निरंजन नामा ।।

चरण 6. शब्द सोई जो सब ते न्यारा त्रिकुटी मुँह टकसारा । ※ एके द्वार होय बानी बोले निकसे मुख के द्वारा ।।

चरण 7. मन ही मुद्रा मन ही करता मन ही है तिहूँ लोका । मुक्त नाम वाही सो कहिये मिट गये धंधा धोखा ।।

चरण 8. सार पवन सबही के उमर पंचासी के पारा । उतपती पर ले काल करत तासो है वह न्यारा ।।

चरण 9. कहे कबीर यह लेख बताऊ सैत होय सो बुझे । गुप्त प्रगट और बाहर भितर सकल ढोर तिही सुझे ।।

भजन क्रमांक 68

टैक सन्तो सहज समाधी फली है । जब से दया भई सतगुरू की सुरत न अन्त चली ।

चरण 1. जहाँ जाऊ सोई परिकरमा जो कुछ करो सो पुजा । शब्द निरंतन मनुवा राचा भाई मिटाऊ दुजा ।।

चरण 2. शब्द निरतर मनुवा राचा मलिन बसना त्यागी । जागत सोवत उठत बैठत ऐसी तारी लागी ।।

चरण 3. आँख न मुन्दो कान न रून्धो काया कष्ट न धारो ।
अधर सैन मैं साहेब देखो सुन्दर बदन निहारो ।।

चरण 4. कहे कबीर सुखमन रहनी जो प्रगटे करि गाई ।
सुख दुख के वह परे परम पद सदा रहत सुखदाई ।।

भजन
क्रमांक 69

टेक सन्तो सन्त बिलग कब कोना लोक लाज कुल की मर्यादा सब त्याग उन दिना । जात

चरण 1. पात का भर्म लिया दिया है सो तो काल अधीना ।

चरण 2. अपने रूप को चीन्हत नाहीं ताते दुवीधा कीना तुलसी ब्राम्हण बड़े कुलीना सबको ई कहे पर बीना ।
नाभा जी भंगी के बालक तासु प्रसादी लिन्हा ।।

चरण 3. ना मानो तो साख बताऊ अजहु चेत कमीना ।
सुपच भक्त रै दास चमारा आप बराबर कीन्हा ।।

चरण 4. शिवरी जात की कोन कुल कहिये सो सहि आप अधीना ।
भाव भक्ति संतन के कारन राम प्रसादी लीन्हा ।।

चरण 5. कहे कबीर सुनो भाई साधो ईतनी साख कहि दीन्हा ।
गुरू मुख होय साधु करे चीन्हे नुगरामती का हिना ।।

भजन क्रमांक 70

टैक सकल हंस मैं राम बिराजे रामबिना कोई धाम नहीं ।
राम बिना कोई धाम बरबरन्ड मैं जोत का वाला राम को दुमरा दुवा नहीं ।।

चरण 1. अरे तीन गुण पर तेज हमारा अरे पाँचतत्व पर जोत जले ।
अरे जिन का उजाला चौदहा लोक मैं सुरत डोर आकास चढ़े ।।

चरण 2. अरे नाभी कमल से परख लेना अरे हिरदे कमल बिच फिरे मणी ।
और अनहद बाजा बाजे शहर मैं ब्रंहन्ड पर अवाज हुई ।।

चरण 3. अरे हिरा मोती लाल जवारथ अरे प्रेम पेधारथ परखो यही ।
अरे साँचा मोती हेरी लेना राम चणी म्हारी डोर लगी ।।

चरण 4. अरे गुरूजन होयतो हेरी ले घट मैं अरे बाहार शेर मैं भटको मती ।
अरे गुरु परताप नानक जी के भणे अरे भितर बोले कोई दुजो नहीं।
अरे सकल हंस मैं राम बिराजे अरे राम बिनारे कोई धाम नहीं
राम ~~बिना~~ बिना कोई .

भजन क्रमांक 71

टैंक अरे होजा ~~ह~~ हुसीयार सदा गुरू आगे अरे मन साबुत फिर डरना भी क्या ।
अरे जो तू आया गगन मन्डर से शीष दिया फिर डरना भी क्या।

चरण 1. अरे जो तेरे घट मैं नार सुखमणा अरे गनका के घर जाता भी क्या।
अरे सितल वृक्ष की छाया छोड कर कंकर ~~पत्थर~~ पै सोता भी क्या ।

चरण 2. अरे नो सो ~~x~~ नदीया बहे घर भितर अरे सात समुन्दर उंडा भी क्या । अरे
~~x~~ गुरू ~~xx~~ गम होद भरीया घर भितर मुरर्ख प्यासा जाता भी क्या

चरण 3. अरे काँसा पितल सोना भी होया अरे पता लगा कोई पारस का
अरे कहे कबीर सुनो रे भाई साधो अरे करम भरम बिच भुला ~~x~~ भी क्या ।।

भजन क्रमांक 72

टैंक अरे तेरी इछा ~~xxxx~~ सिरधा की होयतो तुरत तैयारी करलिजे रे ।
अरे यो मन कारो किधो नहीं माने अरे दोस गुराने मत दिजे
भगती राजी होयने किजे ।।

चरण 1. अरे ओहंग सोहंग की रचना रे देखी ले अरे माय मगन होई रीजे रे ।
अरे पैला दिल अपनो कर मोथो अरे पिछे पावड़ा मत दिजे रे ।।
भगती राजी ।।

चरण 2. अरे ईगला पीगला सुखमणा जोई ले अरे घर सुखमण को लिजे रे ।
अरे अजपा रे जाप जपो सुमरण का अरे उनमुखी आसण की जैट ।।

भजन क्रमांक ×72

टेक

चरण 3. अरे दादूराम सत गुरु शरनो मे अरे जीव मुगत कर लिजे रे ।
अरे कहे कबीर सुनो भाई साधो अरे उनकीशरनो मै रीजे रे
भगती राजी होई ने कि जेटे ।।

भजन क्रमांक 73

टैक अरे धरती अकाश गुफा के अन्दर पुरुष एक रेहेता है भाई ।
अरे हाथ न पाव रूप नहीं रेखा नंगा होकर फिरेता ।।

चरण 1. अरे जोगी होकर जटा बढ़ावे नंग्र पैर क्यो फिरता रे भाई ।
अरे गोन्डबांद शिर ऊपर धरले यूँ क्या साहाब मिलता रे भाई ।।

चरण 2. अरे मुला हो कर बाँग पुकारे वो क्या साहेब बँरा है रे भाई ।
अरे चीटी के पैर से नैवर बाजे ओ भी साहेब सुणता है ।।

चरण 3. अरे जो तैरे घर मे औ मेरे घट मै सब के घट मैं रहता है रे भाई ।
अरे कहैं कबीर सुनो भाई साधो हर जैसे को तैसा ।। अरे कर
गुजरान गरिबी मै साधु भई मगरूरी क्यो करता ।।

भजन क्रमांक 74

टैक अरे गगन पर देश हमारा चले तो साहेब मिल जावे ।।

चरण 1. अरे पाँच तत्व तीन गुण निवा तापर अलख लखाया हेरे भाई ।
अरे तीन लोक पर अमर अखाडा काल भी वहाँ डर जावे है ।।

चरण 2. अरे भणिया गुणिया दोने थगीया अरे समझो भी उलझ जावे है ।
अरे सरग नरग की गैल मैं फिर फिर गोता खावे है ।।

चरण 3. अरे निराकार अकार नहीं है सिरगुण निरगुण नाय हे रे भाई ।
अरे चौदह लोक अगम के आगे हंस रहा लिपटाई है ।।

चरण 4. अरे रामानन्द को सतगुरु मिलगया दिना भैद बताई है रे भाई ।
अरे कहे कबीर सुनो भाई साधो आवागवन मिट जावे है रे भाई ।

मंगल चेतावनी

भजन क्रमांक 75

टैक गुरू म्हारा हँस उभार लो तुम निर धन के राम

चरण 1. अरे नुरी बोलो नुरा सामलो सुन म्हारा दिलड़ारी बात ।
अरे बाटे बालक किन का रोवीया उनको लो नी उठाय ।।

चरण 2. अरे नुरा बोले नुरी सामलो सुन म्हारा दिलड़ारी बात ।।
अरे लोग कुटम हाँसी करे हाँसी करे संसार ।

चरण 3. अरे पैला जन्म की तु बामणी अरे भई मुसलमान ।
पैला प्रित के कारने दर्शन दिया धिनानाथ ।

चरण 4. अरे कबीर आयाउणका देश से कई धन लाया अपार ।
अरे मुक्ती परवाना लावीया यो धन अपार ।।

चरण 5. अरे कहे कबीर धर्मदास से ये पद है निरबाण ।
अरे गावे बजावे सुने समले जिन का सत लोग बास ।।

गुरू म्हारा हँस उबार लो तुम निरधन के हो राम

------------ -------------------------------- --------